Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नए लोग, नई सोच

मेरी प्रिय कविताएँ

अग्निशेखर

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरी प्रिय कविताएँ

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc No....3737 (D)
Dated....17/10/2022

अग्निशेखर

Compliments from
Virender Rawal
20th Oct. 2022

ज्योतिपर्व प्रकाशन
99, ज्ञान खंड-3 इंदिरापुरम, गाजियाबाद-201012

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ISBN-978-93-82009-57-3

प्रकाशक :
ज्योतिपर्व प्रकाशन
ज्योतिपर्व मीडिया एंड पब्लिकेशन
99, ज्ञान खंड-3, इंदिरापुरम,
ग़ाज़ियाबाद-201012

प्रथम संस्करण :
2014

© अग्निशेखर

शब्द संयोजन :
रावत कम्प्यूटर्स, दिल्ली
9811649701

मुद्रक :
डी०जी० प्रिंटर, दिल्ली

मूल्य : पेपरबैक : ₹ 129/-
हार्डबैक : ₹ 249/-

MERI PRIYA KAVITAYEN
BY AGNISHEKHAR

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भूमिका

एक कवि के लिए उसकी स्व-रचित कविताओं में से प्रिय कविताएँ छाँटना, फिर भूमिका भी लिखना कठिन-कर्म है। अनेक प्रश्न घेरने लगते हैं। प्रिय कविता किसे और किस कसौटी पर कहा जाए? कवि जिस कविता का चुनाव 'प्रिय कविता' के रूप में करता है क्या वह उसके पाठक की भी प्रिय कविता हो सकती है? क्या वह उसके पाठक की भी प्रिय कविता हो सकती है? क्या रचनाकार के लिए ऐसी कोई चयन-प्रक्रिया प्रकारान्तर से उसे रचना-प्रक्रिया से संबद्ध मूल-प्रश्नों से नहीं जोड़ती? उसके लिखने के कारण, चुनौतियों, प्रेरणाओं से?

बहरहाल, प्रस्तुत संग्रह के लिए चयनित कविताओं को एक साथ देखने पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल का यह कथन भरसक याद आया कि प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब है। अपने विरल अनुभव-संसार, अपने शिल्प, भाषा-कथ्य और सौंदर्यबोध के साथ मैं जिस भाषा-प्रदेश (कश्मीर) के सच, उसके ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और सामाजिक पक्ष को समकालीन हिन्दी कविता में सिरजता रहा हूँ, वह हिंदी के लिए एक भिन्न मनोजगत है। हालांकि वह वर्तमान भारतीय परिवेश की समकालीन चेतना से संबद्ध है। गहन जिजीविषा के विविध अनुभूतिजन्य सच, अपनी जन-संस्कृति, अपने लोगों की समस्याओं तथा उनकी जटिलताओं की भाव-सत्ता के संताप की पीड़ा से मुक्ति की वांछा इन कविताओं की केन्द्रीय धुरी है।

उस तरह ये कविताएं मेरे निजी भूगोल और उसकी स्थानीय हकीकत से फूटी हैं। समय और समाज की गतिकी से जुड़ी। कला और काल, शब्द और कर्म में संतुलन बनाए रखने का संघर्ष करती हुई। जीवन-मूल्यों और रचना के मूल्यों में तालमेल बिठाती हुई। आत्म-संघर्ष को कविता का आधार बनाती हुई।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

इस तरह पाठक मेरे पहले कविता-संग्रह 'किसी भी समय' से ली गई रचनाओं
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
से गुज़रते हुए भावी आतंक, हिंसा, विस्थापन, विखण्डन, नागरिकता के विलोपन और मध्यकालीन बर्बरता के पुनरागमन का पूर्वाभास पाएंगे। 'मुझसे छीन ली गई मेरी नदी' की कविताओं में कवि के पूर्वाभास के घटित होने का आर्त्तनाद और 'कालवृक्ष की छाया में' की कविताएं, विशेषकर 'सतीसर' शीर्षक से लिखी गई लंबी कविता, पारंपरिक कलह, द्वन्द्व और अन्तर्विरोध के मूल तक जाती हैं। इसी तरह 'जवाहर टनल' की कविताएं भारतीय समाज में आस्था-विश्वासों के आधार पर मिली जलावतनी की त्रासदी को कारुणिकता के साथ खोलकर देती हैं। इसे हिंदी कविता का अल्पसंख्यक स्वर भी कहा गया।

हिन्दी में 'जीनोसाइड़' और आतंकवादी राजनीति से प्रेरित विस्थापन पर कविताएं और उसकी कोई परंपरा नहीं है। विस्थापन प्राय: यहूदी वस्तुसत्य रहा है। इसीलिए 'जवाहर टनल' की कविताएं समीक्षक विजय कुमार को अपनी धरती से निष्कासित महमूद दरवेश, ओसिप मांदलेस्ताम, यानिस रित्सोस की याद दिलाती हैं। उदय प्रकाश को इन कविताओं में आये अलग 'नास्टेल्जिया' से तिब्बती लामाओं की बेचैनियों के साथ ही मांदलेस्ताम, महान ग्रीक कवि कवाफी, मंटों, तस्लीमा नसरीन याद आते हैं। राजेश जोशी हिंदी में पहली बार विस्थापन और नास्टेल्जिया के पीछे दु:ख के साथ एक गहरी टीस देखते हैं और नामवर सिंह जब जलावतनी के अनुभवों को रेखांकित करते हुए दहशत की भयावह अमूर्तता की बात करते हुए इसे काफ्का के उपन्यासों में पाई जाने वाली अमूर्तता से मिलाते हैं तो मुझ जैसे एक विनम्र कवि के लिए खुद को मुगालते में जीने से बचना और बचाए रखना कर्त्तव्य-कर्म बनता है।

ज़ाहिर है, अपनी प्रिय कविताओं की सूची तैयार करते मेरे मन में इन वरिष्ठों की टिप्पणियां भी मस्तिष्क में सक्रिय रही होंगी। आशा है कवि की ये प्रिय कविताएं पाठकों को भी प्रिय ही लगेंगी।

आषाढ़ अमावस्या — अग्निशेखर
8 जुलाई, 2013

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुक्रम

कांगड़ी / 9
कोयला / 11
विदेश से एक पत्र / 13
नेल्सन मंडेला / 15
तिलचट्टा / 17
राजा, तेरी नगरी में चोर / 19
मिहिरकुल आ रहा है / 23
बर्फ / 26
धूप में बर्फ / 27
बर्फ का घर / 28
बर्फ में धूप / 30
चिनार का पत्र / 32
चिनार-1 / 33
चिनार-4 / 34
इस महाविपदा में / 35
अपने ही सरोकारों से / 36
जादुई झील / 37
तूत के अंगार / 38
19 जनवरी 1990 की रात / 39
तड़प / 40
थोड़ा सा प्रकाश / 41
मारीना त्स्वेतायेवा / 42
उदास है सुई / 44
तमस / 45

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नुंद ऋषि-1 / 46
मेरी खाल से बने दस्ताने / 48
तुम्हें देखा / 49
सफदर हाशमी मार्ग-1 / 51
सफदर हाशमी मार्ग-2 / 52
लू-1 / 53
लू-2 / 54
एक शहीद हुए पिता का बच्चा / 55
ललद्यद के नाम-2 / 57
मुझसे छीन ली गयी मेरी नदी / 58
जोखिम / 60
चीन की दीवार / 61
संग्रहालय में कटे हुए पांव / 63
मछेरा : कुछ कविताएं / 64
एक दोस्त का गरमकोट / 65
नींद और सपना / 66
चौखट / 68
एक संग्रहालय / 69
कविता का रंग / 71
जीनोसाइड / 72
प्रधानमंत्री और मक्खी / 73
शरणार्थी शिविर / 75
तमाम उम्र / 80
आंगन के पार से / 81
कैलिफोर्निया में केंकड़े / 85
एम्स्टर्डम के रेड-लाइट एरिया में / 87
जेहाद / 88
तुम्हारी याद / 90
जीवन-राग / 91
काला दिवस / 93
जवाहर टनल / 95

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लहरें / 101
धूल / 103
पुल पर गाय / 105
गूंगी मां / 106
एक पाकिस्तानी दोस्त का आना-2 / 107
गृहमंत्रालय में चूहेदानी / 109
सौतेले दिनों की कविता / 111
विरसे में गांव / 113
एक हिंदुस्तानी कन्संट्रेशन कैंप / 115
दहशत / 117
याद करता है बच्चा / 118
छत पर चांद / 120
अलाव / 122
स्मृतिलोप / 124
आशंका / 126
बारिश में पिट रही स्त्री / 127

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कांगड़ी

जाड़ा आते ही वह उपेक्षिता पत्नी सी
याद आती है
अरसे के बाद हम घर के कबाड़ से
उसे मुस्कान के साथ निकाल लाते हैं
कांगड़ी उस समय
अपना शाप-मोचन हुआ समझती है
उसकी तीलियों से बुनी
देह की झुर्रियां में
समय की पड़ी धूल
हम फूंककर उड़ाते हैं
ढीली तीलियों में कुछ नयी तीलियां भी
डलवाते हैं।

वह समझती है
कि दिन फिरने लगे हैं
हम देर तक रहने वाले कोयले पर
उसमें आंच डालते हैं
धीरे-धीरे उत्तेजित होकर
फूटने लगता है उसकी देह से संगीत
जिसे अपनी ठंड की तहों में
उतारने के लिए हम
उसे एक आत्मीयता के साथ
अपने चोगे के अंदर वहशी जंगल में
लिये फिरते हैं

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और जब रात को बुझ जाती है कांगड़ी
हम अनासक्त से होकर
उसे सवेरे तक
अपने बिस्तर से बाहर कर देते हैं
कांगड़ी अवाक् देखती है हमें रात भर
आदमी हर बार
ज़रूरत के मौसम में उसे फुसलाता है
परन्तु नहीं सोचता कभी वह
उलटकर उसके बिस्तर में
भस्म कर जाएगी सदा की बेहूदगियां

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोयला

पहले एक पेड़ होता है कोयला
अपनी ज़मीन में उसकी जड़ें होती हैं
वह अपनी हवा पी रहा होता है
अपने संगीत में वह
अबाबील की एक चक्करदार
उड़ान होता है

बचपन को पार कर रही उम्र की
उमंग होता है
कोयला पहले एक पेड़ होता है

फिर एक दिन शहर से कुल्हाड़ी आती है
उसे आपाद मस्तक घूरकर
शाख-शाख तोड़ गिराती है
इकट्ठा करती है
आग लगाकर लपटों को बुझा-बुझा
गाढ़े धुएं में उसे भून डालती है
तब वह कोयले की शक्ल में
छकड़े में लदकर
बाज़ार चला आता है
बाज़ार से वह घर-घर पहुंचता है
जलता है
बुझता है

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फिर-फिर जलता है
और एक दिन सचेत होकर
तमाम ज़्यादतियों के खिलाफ
गगनचुम्बी फन उठाए
धू-धू करता है

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विदेश से एक पत्र

लिखा समन्दरों पार के एक देश से
बारबारा विल्डी ने
कि लिखा करो बीच-बीच में इसी तरह चिट्ठियां
मुझे भेजा करो अपनी कवितायें
मैं मौसम का बदलना करती हूं महसूस
अपने अंदर
और खुशी-खुशी
न जाने कितने काम कर जाती हूं दिन भर
मुझे भी प्रिय है
पांच अरब संतानों की गरिमामयी पृथ्वी का
अस्तित्व
यह एक सुगंधित नीले गुलाब की तरह खिली हुई
दिखती है ब्रह्मांड में
यह कितनी बड़ी बात है
कि हम एक दूसरे को चाहते हैं इसलिए
क्योंकि हम चाहते हैं पृथ्वी और उसके जीवन को
अपनी आत्मा की तमाम ताकत से
तुम कहते हो तुम्हारे देश के बच्चों की पतंगें
आकाश में बादलों के पार स्थित
हमारी सांसों का हिसाब रखने वाले विदेशी
उपग्रहों से जा उलझती हैं
मैं तब सोचती हूं तमाम वंचित बच्चों के बारे में
हज़ार तरह की समस्याओं के बारे में

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

जिन्हें सुलझाया ही जायेगा कभी न कभी
परन्तु
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
अगर उछाला जाएगा गेंद की तरह कभी
इस पूरी पृथ्वी को आकाश में
टूट फूटकर रेजा-रेजा हो जाएगी
तब हम कैसे लिखेंगे एक दूसरे को चिट्ठियाँ
कहां आयेंगी तुम्हारी कवितायें
समुद्रों पार से
तब हम कैसे मिलेंगे एक दिन
बरसों बाद

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नेल्सन मंडेला

ज़ंग लगे सीखचों के अंदर से तुमने कहा
यह आग दौड़ पड़ेगी एक दिन
इस जंगल में
काले चीते की तरह
जहां कहीं से भी आयेगी
तुम्हारी बू

तुम्हारे मन्सूबे
अचानक बिल्ली को सामने देखकर
कबूतर की तरह सहम जायेंगे
पसीने से तर
धड़कनों से तूफान में घुटकर ही
समझोगे मुक्ति का अर्थ

मेरे अंदर दुर्द्धर्ष काली सड़कों पर
और कितनी देर हंसेंगे
कीलों में जड़े जूतों में
तुम्हारे गोरे पांव
बहुत ऊंची है
मेरे स्वप्नों की कद-काठी
तुम्हें दिखाई नहीं देता
पेड़ से लिपटकर
चढ़ रही है बेल

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
देखोगे खिल आये होंगे दिन
किसी अलस्सुबह

उस समय
तुम्हें चील के पंजों में
पकड़े सांप की तरह
उड़ूंगा आकाश में
कोई गौर नहीं करूंगा
तुम्हारी याचनाओं पर
बीच रास्ते पटककर फेंक दूंगा

उस समय तमाम पेड़ बजा रहे होंगे शहनाईयां
आकाश में कबूतर और रंगीन गुब्बारे
उड़ाये जा रहे होंगे
सड़कों पर घरों से निकल आये होंगे
सभी देशवासी
उस कम उम्र बच्चे का मुंह देखने के लिए
जिसके हाथ में
हमारे संघर्षों के रंग की
विजय फहरा रही होगी

उस स्वप्न-धुली
सुबह को देखने के लिए
मैंने जीवन की कुछ अंतिम सांसें
कमीज की तहाकर उलटायी
आस्तीनों में छिपा रखी हैं

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तिलचट्टा

दूर बीहड़ वनों में घुप्प अंधेरों के नीचे
बेशुमार शताब्दियों की
सिलसिलेवार संकरी टेढ़ी-मेढ़ी सुरंगों से होकर
दैत्याकार दांतों वाले शेरों
दीर्घकाय जंगली हाथियों से बचते हुए
एक तरह से
उनसे लोहा लेते हुए
मेरे लिखने-पढ़ने की मेज पर
चढ़ आया मोटा तिलचट्टा

वह चढ़ा
इतिहास के पोथों, उपन्यासों, निबन्धों,
कविता-संग्रहों व राजनीति-शास्त्र की जिल्दों पर
और हँस पड़ा
अध्यात्म की गर्वोक्तियों पर
बोला,
देखो, मैं कैसे रह सका हूं जीवित
विपरीत परिस्थितियों में
प्रकृति से निरन्तर लड़ते हुए
लगा मुझे कि सहम गयी हैं किताबें
उसके व्यक्तित्व के आतंक से
तिलचट्टा मेरे देखते-देखते
महात्मा गांधी के चांदनी से चिकने सिरपर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चढ़ने की कोशिश में
कई बार फिसल-फिसल कर गिरा
फिर पास ही कार्ल मार्क्स की दाड़ी में घुसकर
एक अनन्त मुस्कान में फैल गया
और बोला,

मैंने भूखण्डों को जलते देखा है
उबलते हुए समन्दरों में मैंने देखा है
नदियों का चीखते-कराहते हुए उतर-डूबना
गिरना ज़हरीले पानियों की गाजों का
आग के मूसलों का
पेड़ों का
पंछियों का
मैंने लम्हों में कितनी बार देखा है सर्वनाश
किन्तु रहा फिर भी मैं ज़िन्दा
मैं पैदा हुआ हूं ज़िन्दा रहने के लिए ही
मैं
रहूंगा
रहूंगा किसी भी आशंका में हिचहोले
खाते हुए भी
ज़िन्दा रहूंगा
तिलचट्टा तबसे
अपनी अनझिप और बेधक नज़रों से
देखता है मुझे
हर अवस्था में निरन्तर
कहता है,
कुछ सीखो मुझसे

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राजा, तेरी नगरी में चोर

दिन कोने में दुबकी हुई
सहमी बिल्ली से हो गये हैं
सांसों के उतार-चढ़ाव में
डूबते हुए बच निकलती है
दिए की लौ

अब हर ओर
दुर्गन्ध-सी फैल चुकी है खबर
कि ज़मीन की तहों को
फाड़ता हुआ
घाटी का पिशाच
सतह पर उभर आया है
अब गुजरती नज़रों से
कोई चोर झांकने लगा है

हर रोज़ खिड़की से सूरज
हिजड़ो की भाषा में
लिखा पत्र
दे जाता है लोगों के हाथ

अब शहर में
हर ओर से तंग सड़कें
मुहल्लों में घुसकर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फुफकार रही हैं
मुझे शिकायत नहीं
कि मेरा ढहता हुआ मकान
धूल के आंसू बहा रहा है

मेरा बचपन
धुंधलके में खोये पर्वत-दामन में
गिरे हुए जहाज़ की तरह धँसा पड़ा है
नजरें अब दूर तक नहीं जातीं
हमारा नेतृत्व
बुझी लालटेन-सा
घर की खूंटी पर टंगा है

लोग
बंद बिस्तरे में
चिनार की जड़ें लिये
किसी सुरक्षित कोने की तलाश में
एक अंधी सुरंग से
कहीं भाग रहे हैं

कुछ लोग
बाहरी और भीतरी घुटन में
तालमेल बिठाते हुए
नदी के आर-पार
एक पूरे शहर-सा बंट गये हैं

अब सैलाब
सिर की ऊंचाई से बह रहा है
हर कहीं शंकित भीड़ के बीच
मंदिर
मदारी से लग रहे हैं

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे आंगन में अक्सर
दिन की उगी घास
अंधेरे की भैंस चर जाती है
वैसे भी अब
मेरी बात रद्दी कागज में बदल रही है

यह नदी जो उम्र है
मत पूछिये कि तटों पर
कुछ खाली मकान
क्यों मायूस से खड़े है
खिड़कियों से बाहर निकलता धुआं
किसी वीराने को शब्द दे रहा है

मेरे मित्रों को शिकायत है
कि वे सरकारी नल के पानी-सा
व्यर्थ बह रहे हैं

दफ्तरों में
कूड़ादानियों पर
रंगरोगन के आदेश लागू हैं

इधर
अब हरे जंगल में
आरी तेज चलने लगी है
डरे हांगुल को कोई अंतर नहीं पड़ता
कि देश के अखबारों में
चर्चा है
कि उसकी रक्षा में
एक डाक-टिकट जारी हुआ है

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब अपनी बस्ती के पिछवाड़े
मल्बों के नीचे दबी पड़ी
राहें खोजनी ही होंगी
कि कहां से मेरे पूर्वज
उतरकर गये थे
पर्वतों के उस पार

बच्चे अब सोने से पहले
कहानियां नहीं सुनते
उनके भीतर
खुलती पंखुड़ियों पर
कोई सूई-सी चुभ रही है

मेरा बच्चा
रात को नींद में
एक खेल के बोल बड़बड़ाता है—
राजा जी, राजा!
क्यों राजा
श्रीनगर में चोर आया
किस रास्ते

अब हर सांस में
कांपती है दिये की लौ
और
दिन कोने में दुबकी हुई
सहमी बिल्ली से हो गये हैं

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिहिरकुल आ रहा है

बन्दूक उठाओ
मिहिरकुल आ रहा है बालश्कर
कुचलता हुआ हमारे रास्ते
उड़ाता हुआ गुबार
आसमान से अंधेरा उतार रहा है
अंधेरे में कुत्ते भौंक रहे हैं
घरों में सांस रोके हुए
बैठे हैं लोग
दरवाजों की कुंडियां चढ़ाए

बन्दूक उठाओ
और सहसा खोलकर दरवाज़े अपने
बाहर निकल आओ
कि फिर से आ रहा है
मिहिरकुल

उसका घोड़ा
हमारी नींद के जंगलों को
टापों तले रौंदता हुआ
तड़क-तड़क आ रहा है
मिहिरकुल को रोको
वह अपनी फौजों द्वारा मारे गये
हमारे बच्चों की रोती हुई माताओं से

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करेगा बलात्कार
वह ढहाकर बांध
सैलाब को शहर के ऊपर
पेड़ों की फुनगियों के पास से
बहते हुए देखकर खुश होगा
वह आकाश में
चीलों, गिद्धों और कौवों के हुजूम को देखकर
उछल-उछल पड़ेगा
और चीखने लग पड़ेगा विचित्र आवाज़ में
मिहिरकुल लोहे का चेहरा चढ़ाए
पेड़ों को दातुन की तरह चबाता हुआ
जब किसी देश की ओर
मुंह करके दहाड़ता है
गुल हो जाती है
बिजली पूरे शहर में
ड्यूटी पर खड़े सिपाही की समझ में
कुछ नहीं आता
कि अचानक क्यों टूट गया है
संसद-भवन की खिड़कियों का कांच
क्यों हर तरफ
चीखने चिल्लाने रोने लगे हैं
सुर में सुर मिलाकर बच्चे
टूट पड़ने से पहले ऐसे क्षण मिहिरकुल
ताकता है उस देश के सत्तारूढ़ दल और
विपक्ष दोनों को
झपट पड़ने से पहले
जैसे चूहे को बिल्ली

बन्दूक उठाओ
मिहिरकुल आ रहा है

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फाड़ देने को पुरानी कमीज से
हमारे दिन

पर्वतों से धकिया कर
चोटी तक पहुंचने से पहले ही
लुढ़का देने को
स्वप्नों के दबंग हाथी
साथी, वह आ रहा है

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बर्फ

बर्फ बेशुमार अब भी गिरती है
बचपन के दिनों जैसी ही
अब भी किंकियाते हैं बर्फ में चिनार पर कौवे
छतों से अब भी गिरते हैं
जैसे ग्लेशियर
कुत्ते भी उसी तरह
कुलांचें मारते हैं लेटते हैं
खेलते हैं बर्फ में

बर्फ बेशुमार अब भी गिरती है
बचपन के दिनों जैसी ही
बस हम हैं कि वैसे नहीं रहे
न आंगन में बर्फ के आदमी बनाने उतरते हैं
न फेंकते हैं खेल-खेल में
एक दूसरे पर बर्फ के हथगोले
न मुबारक करते हैं किसी को
नया हिमपात
न किसी के रपटाकर
गिरने से चौंकते हैं
न फब्तियां कसते हैं
हम खिड़की में बैठकर चन्द मिनट
बर्फ का गिरना देखते हुए
उन दिनों के बारे में सोचते हैं
और अंदर चले जाते हैं

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धूप में बर्फ

धूप में बर्फ गिर रही है हमारे अंदर
सदमों की तरह जमा होती हुई
हर तरफ टूट गिर रही है
पेड़ों से शाखें
दम तोड़ रही है कल्पना में साधी
हरी-भरी खेतियां
तारों में दौड़ रही बिजली गिरकर
जमीन को करण्ट के झटके दे रही है
धूप में बर्फ गिर रही है

धूप में बर्फ
खुलेआम हर प्यासे को
भेड़िये की नजर से देख रही है
वह गिर रही है
पूरी बस्ती को अपने अंदर निगलती हुई
हर दायित्व के पास से
सांप की तरह सूंघते हुए गुज़रने की
कोशिश करती हुई

धूप में बर्फ गिर रही है
हिजड़ों की तरह
बेशरम नाच नाचती हुई

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बर्फ का घर

यह बर्फ का बहुमंजिला घर खड़ा है
सदियों से जमी हुई झील की सतह पर
पूर्वोन्मुखी नहीं है इस घर का दरवाज़ा
खिड़कियों की भी ऐसी काट है
कि समझ में नहीं आता
वो किस तर्क से खिड़कियां हैं
कोई भित्तिचित्र नहीं
आवाज़ नहीं
पहल नहीं
जैसे दूर-दूर तक फैली बर्फ पर
पड़ा हो मुरदा कोई नंगा

इस घर के अंदर हरेक के लिए जगह है
परन्तु अपनी-अपनी जगह है
स्तब्ध है मुखिया की जगह
तकिया सटाये बैठा
बर्फ का बुत
खौफनाक बिजूके सा
हालांकि दाना चुगने आती चिड़ियां
पहले कुछ देर उसी के अकलमंद सिर पर
विश्राम करती है
बरसों से बर्फ के चूल्हे पर
मिट्टी की हांडी चढ़ी हुई है

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बच्चों के रोने की आवाज़ों की उमस
सारे घर में
मकड़ी के जाले की तरह
यहां वहां तनी है
इस घर की छत पर मंडराते
दैत्याकार बादल
फिलहाल रोके खड़े हैं
सूरज के घोड़ों को

यह युद्ध बरसों से चल रहा है

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बर्फ में धूप

बर्फ में धूप निकलेगी एक दिन
बादलों से पटे आसमान को छेदकर उतरेगी
ठिठुरती चेतना की तमाम सीढ़ियां
हमारे भीतर
दबावों को हल्का करती हुई
फूट निकलेगी भाप रोम-रोम से
और ढीली पड़ती बर्फ के नीचे से
घास की कोई नन्हीं कोंपल
सर उठाकर दमक उठेगी

पास के पेड़ से कोई चिड़िया उड़कर
घर-घर की बंद खिड़की पर
बेसब्री से दस्तक देगी
आंगन को पार करती हुई
किसी बच्चे की आवाज़ बिल्ली की तरह
दीवार पर से चुपचाप गुजर जाएगी

बर्फ में धूप निकलेगी
एक ठहरे हुए मौसम को गति देती हुई
जमी हुई भूमिगत नल-पाइपों सी शिराओं में
मिट्टी की सोंधी गंध का संचार करती हुई
सर्दियों की छुट्टियां बिता रहे बच्चों के
स्कूलों की घंटियां बजाती हुई

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

अधमुए जिस्मों में जान भरती हुई
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
निकलेगी बर्फ में धूप
और सिरहाने आकर बैठेगी मां की तरह
बालों पर हाथ फेरती हुई
एक दिन निकलेगी बर्फ में धूप

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चिनार का पत्र

मैंने हब्बाकदल[1] से
झेलम में देखा
मन्द-मन्द बहता हुआ
चिनार का हरा पत्ता
मैंने साथ-साथ बहकर पढ़ी
उस पर लिखी
खुली धड़कन

झेलम मुझे पाकिस्तानी जासूस की तरह
लगती है
मैं गले में पहना जनेऊ
कमीज के अंदर खोंसकर
जल्दी-जल्दी घर लौट आया
और नींद मे भी महसूसता रहा
कि जमीन खिसक रही है

1. श्रीनगर का एक पुल

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चिनार-1

चिनार! तुम्हें कैसा लगता है
बहती थी जो तुम्हारे सामने से होकर
चांदनी की चादर सी
मैली हो गयी है अब बितस्ता
वितस्ता में अब नहीं बहते झिलमिलाते दिये
पूजा के फूल
जगह-जगह सूने पड़े हैं स्नान-घाट
किसी विधवा की जैसे रूसियाई मांग
मैंने बहुत दिनों से तुम्हें भी
नाभि तक पानी में उतरकर सूरज को
जल चढ़ाते नहीं देखा है

तुम कहां धोते हो कपड़े-लत्ते
हाथ-मुंह
क्या पीते हो
चिनार!
असह्य है तुम्हारे लाखों
बातूनी पत्तों की खामोशी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चिनार-4

सदियों से
हम उखड़कर अपनी जमीन से
पर्वतों के उस तरफ
जा बसते हैं
धीरे-धीरे भूल जाते हुए अपना मुहल्ला
दुकानदार
गली में फिर रहे अलसाये खजियल कुत्ते
पगुराती गायें इत्यादि
परन्तु नहीं निकल पाते हम
चिनार की सौंधी स्मृति से
इंचभर भी बाहर
हम टहलते हैं उसकी आत्मा की हरी दूब पर
जैसे नन्हें-नन्हें बच्चे नंगे पांव
हम जहां जाते हैं चलता है आसमान में
चांद की तरह साथ-साथ
और घर नहीं लौटता चिनार

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस महाविपदा में

बंद हैं खिड़कियां सहस्रमुखी कविताओं की
चुप हैं शब्द अपनी-अपनी सीपियों में
हमारी लहूलुहान दस्तकें नहीं हैं मानवेतर
कि घबराकर दूर भागते हो तुम

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपने ही सरोकारों से

ओ हिंदी जगत के अधिकांश कवियो
मेरे मित्रों!
तुम नहीं थे कोई 'रिलीफ कमिश्नर'
कि देना पड़ रहा है हमें तुम्हारी कविताओं में
थोड़ी सी शरण पाने के लिए आवेदन-पत्र
एक संपूर्ण लुटी-पिटी विस्थाापित जाति के घाव
बसना चाहते हैं तुम्हारे संवेदन के घर में कहीं

उन्हें जबकि जलावतनी में यहां
नहीं मिल रहा एक चीथड़ा तम्बु भी
बिना लस्त-पस्त होने के
वे तलाशते हुए कहां-कहां फिरेंगे
खानाबदोशों की तरह
सांस लेने की जगह
मेरे भारत महान में

कहां सुरक्षित रहेंगी इस धूप और पानी में
सैकड़ों गठरियों में बंधी
अभिनवगुप्त और कल्हण की पांडुलिपियां
ललद्यद् और नादिम की कविताएं

इस महाविपदा में तुम नहीं रहे हमारे साथ
जैसे तुम थे ही नहीं यहां इन दिनों

26.12.1990

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जादुई झील

इस झील का जादुई लहरदार पानी
भरमाता है हर भोली नजर को
चिड़ियों की रंगीन आवाजों से भरपूर
पेड़ों की उल्टी छायायें
गाने ही वाली हों जैसे कोई लोकगीत
झूम झूमकर
अभी, बस अभी
पर कभी नहीं गातीं छायायें
ठगी हुई मछयारिन दृष्टि रात के
इस पहर में
बार-बार हवा में उछाल कर
फेंकती हैं पानी में जाल
कि चलो इस बार तो फंसेगा चांद

दया करो सैलानियों के सौंदर्यबोध पर
फिल्मी कवियों के दारिद्रय पर
वे पानी के नीचे कैद आइसबर्ग के
सतह पर आते शब्दों को
बुलबुले कह रहें हैं
झील ने छिपा रखी है इतनी बड़ी बात

16.11.1990
जम्मू

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तूत के अंगार

जब कविताएं वजह बनीं
मेरे निष्कासन की
मैंने और ज्यादा प्यार किया
          जोखिम से
अवसाद और विद्रोह के लम्हों में
मैंने मारी आग में छलांग
और जिया
शायर होने की कीमत अदा करते हुए

मुझ तक आने के रास्ते में बिछे हैं
तूत के दहकते अंगार
कौन आता नंगे पांव
मेरी वेदना के पास

21.5.1993

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

19 जनवरी 1990 की रात

घाव की तरह
खुलती हैं मकानों की खिड़कियां
छायाओं की तरह झांकते हैं चेहरे हर तरफ
फैल रहा है बर्फानी ठंड में शोर
हमारी हड्डियों की सुरंग में घुसने को मचलता हुआ
गालियां, कोंसने, धमकियां
कितना कुछ सुन रहे हैं हम

तहखाने में कोयले की बोरियों के पीछे
छिपाई गयी मेरी बहनें
पिता बिजली बुझाकर घूम रहे हैं
कमरे में यों ही
रोने बिलखने लगे है मुहल्ले के बच्चे
होंठ और किवाड़
दोनों हैं बंद
बाहर कोई भी निकले
शब्द या आदमी
दोनों को खतरा है

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तड़प

अरे, मेरा करो अपहरण
ले जाओ मुझे अपने यातना-शिविर में
कुछ नहीं कहूंगा मैं
करो जो कुछ भी करना है
मेरे शरीर के साथ
ज़िन्दा जलाओ, काटो
या दफन करो कहीं मुझे
नदी के किनारे
बर्फीले पहाड़ों पर
किसी गांव में
या कस्बाई गली में
कहीं घूरे के नीचे

मैं तरस गया हूं
अपनी जमीन के स्पर्श के लिए

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थोड़ा सा प्रकाश

मेरी सोयी हुई मां के चेहरे पर
किसी छिद्र से पड़ रहा है
थोड़ा सा प्रकाश
हिल रही हैं उसकी पलकें
कौन कर रहा है इस अंधेरे में
सुबह की बात

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मारीना त्स्वेतायेवा

(वरयाम सिंह के लिए)

मेरी गहरी नींद में उसने
टॉर्च की लंबी रोशनी फेंकी
और मैंने उसे अपने अंदर गिरती बर्फ में
पेड़ के नीचे खड़े देखा

रात के घने अंधेरे में कहा उसने
मैं न तुमसे प्रेम करूंगी और न विवाह
मैं बचाना चाहती हूं तुम्हें ध्वस्त होने से

मैंने उसे अपनी मां के बारे में बताया
जिसने हमारे नये वर्ष की सुबह
मुंह देखने के लिए
सिरहाने की थाली में रखा था
उसका कविता-संग्रह
उसने महसूस किया दुनिया में हर कहीं
वह अपने ही घर में है

उसने जानना चाहा मेरे उस प्रेम के बारे में
जिसने धकेल दिया मुझे
जलावतनी में
वह उलटती पलटती रही
मेरी फिर जमा हुई किताबों को

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और कुरेदती रही
मेरे छूटे हुए वतन की स्मृतियों को

मैंने उससे शिकायत की
लम्बे अर्से से चिट्ठी न लिखने की
वह भागी
गिरती हुई बर्फ में यह कहकर
पहले लेकर आऊंगी
कविताओं के दिन

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उदास है सुई

अभी सुरक्षित है
संग्रहालय में बुर्ज़होम[1] का एक ठंडा शरीर
पांच हज़ार बरस से अधिक पुराना
एक सोया हुआ गवाह
उसके सिरहाने के पास ही पड़ी है एक सुई
अकेली और गुमसुम
कोई चुराकर ले गया है उसका धागा
अनसिली रह गयी है
हजारों बरस पुरानी सुई की
बेशुमार इच्छाएं
निष्प्राण है संग्रहालय में
हमारा पूर्वज
क्या सियेगा अब वह हमारा
फटा हुआ लिबास
नंगे हैं हम
हमारी आत्मा का धागा है गुम
उदास है सुई

1. कश्मीर का प्रसिद्ध उत्खनन-स्थल

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तमस

तमस हर तरफ खिंचा पसरा था
जैसे खड़ा था सामने एक भयानक रीछ
और हम सहमे हुए थे
खो गया था सबका दिशाबोध
घड़ियों में जरूर बज रहा था कुछ
पता नहीं कहां पर थे उस वक्त खड़े हम
खत्म हो जाने के खिलाफ मूक
किसी भी छोर से सूरज उगने तक
हमने बचायी किसी तरह
जीवन की लौ

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नुंद ऋषि-1

जिसके कंधे पर सिर रखकर कभी
फूट फूटकर रोना था मुझे
वह खुद तलाश में है एक कंधे की

काठ की खूंटी से टंगे
तुम्हारे फिरन के साथ
हमारी कितनी स्मृतियां जुड़ी थीं
रोती है यहां जलावतनी में मेरी मां
इत्मीनान से मरने की जगह से वंचित
बरसों पुरानी काठ की सन्दूकची को याद कर
वह पगला जाती है इस कुंभीपाक में

मेरे एक कविमित्र ने अभी
हाल ही में कहा था
कि वह कभी वतन लौटने के बाद
सबसे पहले जाएगा चरारे शरीफ

क्या पता इसी कारण
जला तो नहीं डाला गया
तुम्हारा घर और गांव

मैं स्थगित करता हूं
एक बार तुम्हारे पास रोने की तमन्ना

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और पेश करता हूं तुम्हारे लिए
अपना धड़कता हुआ कंधा
जिस पर तुम भरोसा कर सकते हो

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरी खाल से बने दस्ताने

दस्तानों में छिपे हैं
हत्यारों के हाथ
एक दिवंगत आदमी कह रहा है
हर किसी के सामने जाकर,
ये दस्ताने
मेरी खाल से बने हुए हैं

खुश हैं हत्यारे
कि सभ्य लोग नहीं करते हैं
आत्माओं पर विश्वास

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हें देखा

तुम्हें बरसों बाद देखा
जैसे आज फिर पहली बार देखा
और ठगा रह गया
एक दूसरे का खूब खूब स्पर्श करती
आतुर आंखों ने कोसा आंधियों को
किसे समझायें
कितना कुछ उखड़ गया है इस बीच
एक भी पेड़ नहीं है दूर तक
जिसकी घनी टहनी पर जा बैठते हम
पत्तों के बीच इसी वक्त
और किसी को पता भी नहीं लग पाता
ओ, मेरी आत्मा!
यहां ज़ख्मों की तरह खुलती हैं
अर्जित गोपनीयताएं सबके सामने

कहां सहेजकर रखूं इन लम्हों को
जिनमें हम दो शापग्रस्त लहरों की तरह
खड़े हैं आमने-सामने
और एक दूसरे को नहीं ले पाते हैं बाहों में
मुझे कभी यह भी लगता है
कि हम खड़े हैं
राष्ट्रीय अभिलेखागार की अलमारी में
अपने दिनों के संवेदनशील

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मूर्तिशिल्पों की तरह
तुम्हें बरसों बाद देखा
अधजले मकानों के धुएं और
बलात्कारों की दबी चीखों के स्वर्ग से निकलकर
एक जाति-संहार के महापर्व पर
यहां अचानक

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सफदर हाशमी मार्ग-1

तुम्हारे नाम पर
दिल्ली की एक सड़क का नाम है
यहां कन्धे से झोले लटकाए
टहलते हुए मिलते हैं
कवि, रंगकर्मी, कलाकार
ठिठक जाते हैं मेरे पांव हर बार...
अभी किसी रिहर्सल से लौटकर
हाथ में पाण्डुलिपि लिए
खड़े हो जाओगे मेरे सामने
धुले हुए सफेद कुरते में
जैसे कोई राजहंस
'अरे, तुम अग्निशेखर...
कितने अच्छे थे कश्मीर के वे दिन!'

त्रिवेणी के रेस्तरां में
गिरती है चाय की प्याली में
आंसू की एक बूंद
और मैं करता हूं रुमाल से ऐनक साफ
इस समय कोई नहीं है यहां
सिवाय एक आदमी के
जो पोस्टर पढ़ रहा है
असहमति का

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सफदर हाशमी मार्ग-2

उनके पास पहुंचने से पहले
वहां नहीं थी खामोशी
वे बोल रहे थे तल्ख विषयों पर
जिनसे मैं भी था सहमत

उनके पास पहुंचने से पहले
उमस नहीं थी वहां
चेहरे नहीं थे भावशून्य
पतझड़ी पत्तों की तरह पीले से
उन्होंने सुनी मेरी कथा बेमन
दूसरा तीखा रंग...साम्प्रदायिक
कुरुप...वीभत्स
स्वर्ग की दूब पर
फैल रहा गाढ़ा लहू
हम विस्थापितों का
निर्दोष

वे दिखते रहे सहमत से
हिलाते रहे सिर शालीनता के साथ
कभी-कभी लेते रहे जम्हाई
जैसे निगल जाएं मुझे अपने अन्दर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लू-1

तपी हुई धरती पर रखे
चिनार से मेरे पिता ने
अपने हरे पांव-
हे राम!
राशन, पानी और टैंटों के लिए
निकाले गये जुलूस में चलते हुए
कहां उन्होंने
मेरी जल रही हैं पलकें-
मैंने उनके सर पर रख दी
गीली रुमाल...
पुलिस ने छोड़े आंसू के गोले
भाग गये विस्थापित

पिता बैठ गये एक गली में
खम्भे के साथ, बोले-
चलो करते हैं धर्म-परिवर्तन ही
और लौट जाएंगे
घने चिनारों की छांह में
वहीं मरेंगे अपनी मातृभूमि में
एक ही बार
पिता देखते रहे धूप में अवाक्
और वहीं पर
हो गये ढेर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लू-2

इस धूप में
पगला गयी है मेरी मां
झर गये हैं उसके पत्ते
उसकी स्मृतियां
रहती हैं दिन भर निर्वस्त्र
हो गयी है मौन...
वेदनाओं से मुक्त
किसी पोखर सी उदासीन
लू चल रही है
और डॉक्टर लिखते हैं एक ही उपचार
चिनार की हवा! क्या करूं माँ
मेरे बस में नहीं है
यह दवा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक शहीद हुए पिता का बच्चा

मरुस्थल पर मस्ती करता हुआ बच्चा
बैठे हुए ऊंट की गर्दन से झूलकर
कल्पना करता है पिता की मजबूत बाहों की
और देखता है पास खड़ी इकहरी मां की आंखों में
थोड़ी सी चमक
वह रेत उलीचता हुआ भागता है तृषा से बेहाल
मां के अंदर तक
और लौटता है घर की तरफ चुपचाप कदमों से
कुछ देर के बाद वह आंखों-आंखों चढ़कर
छान मारता है समूचे पेड़ को
और फुनगी से बाहर ब्रह्माण्ड में झांककर उतरता है
मां की गोद में
देता है दिलासा कि उसने देख लिया है
एक तारे के पीछे छिपकर बैठे पापा को
वह आयेंगे एक दिन हमें बिना बताये...
मां ढक लेती है पलकों के पीछे
उसकी मासूम सांत्वना

बच्चा देखकर ईश्वर के हाथों में ढेरों हथियार
पूछता है मां से
कि क्या ईश्वर भी करते हैं लड़ाइयां
वह पहुंचता है मां की खामोश तलहट तक
जैसे हो अंगार सा कोई शब्द

अग्निशेखर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निस्तेज दुनिया की सूखी हुई घास पर
मां उसके सर पर फेरती है
निःशब्द हाथ

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ललद्यद के नाम-2

तुम्हारे पास तो भी कच्चा धागा है
जिससे तुम खींच रही हो समुद्र में नाव
मेरे पास कुछ भी तो नहीं है
गरमी के इस कहर में
नंगे तलुवों से मापते हुए अन्तहीन रेत
सूरज को रोकने की कोशिश है
माथे पर धरा मेरा बेखून हाथ
तुम पार तरने के लिए
कर रही हो अपने ईश्वर से मनुहार
मैं किसे पुकारूं
मेरे देवी-देवता भी मेरे साथ है जलावतन
तुम्हें तो विश्वास है
कि उस पार है तुम्हारा घर
जिसके लिए तुम हो मेरी ही तरह बेचैन
पर मेरे घर का शेष है
अस्थि-विसर्जन

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुझसे छीन ली गयी मेरी नदी

मुझ से छीन ली गयी मेरी नदी
बदल दिया गया उसका नाम
बंद हो गया उसमें दियों का बहना
मुझ से छीन ली गयी चिनार की छांह
उसका कर दिया गया लिंग-परिवर्तन
वह थी मेरी भुवन-व्यापिनी मां
उसके रोम-रोम से मुस्कुराती थी
मेरे सपनों की कोंपलें

एक दिन चुपचाप बदल दिये गये
मेरे सैंकड़ों गांवों के नाम
जैसे आंख मूंदकर पहुंचा दिया हो
किसी अरब-देश में
मुझसे छीन ली गयी मेरी भाषा
छीलकर फेंक दी गयी उसकी लिपि
इस तरह सदियों की ठंड में
बर्फ होती गयी मेरी आवाज़
मुझसे छीन लिया गया मेरा चेहरा
और सब तरफ से पहचान लिये जाने के डर से
मैंने बदल लिया हुलिया
और घूमता रहा गलत फहमी में बेखौफ

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुझसे छीन लिए गये धीरे-धीरे,
मुस्कान, बर्फ, पहाड़ियां,
पेड़, मौसम, त्यौहार
और समूची मातृभूमि अबकी बार

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जोखिम

एक लड़की करती है
किसी से प्यार
सड़कों पर दौड़ने लग पड़ते हैं दमकल
साइरन बजाते
कवि चढ़ता है अपनी छत पर
और मुस्कुराता है कुछ पल
वह बदल देता है
अपनी कविता का शीर्षक
बच निकलती है लड़की

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चीन की दीवार

यह दीवार कहां से शुरू होती है सम्राट
पहाड़ के इस छोर से या तुम्हारे महल के
अन्त:पुर से
यह दीवार कहां से शुरू होती है सम्राट
तुम्हारे भीतर के भूगोल में?
यह पहाड़
जो तुम्हें करते हैं बेचैन
उतरते हैं तुम्हारी कच्ची नींद में
अपने वन्य प्राणियों के साथ
आंधियों और दावानल के साथ
यह पहाड़ कहां से शुरू होते हैं सम्राट?

यह पहाड़ तो सहज और खामोश दिखते हैं
इन्हें तुमने इतनी लंबी हथकड़ी क्यों
पहनाई हैं सम्राट?
यह पहाड़ कहां तक फैले हैं
तुम्हारी चिंताओं में
इतने क्यों हैं सिपाही तैनात
इस दीवार पर
यहां पर तुम्हारी दीवार में
यह कैसी दरार है सम्राट
दबी हुई प्रजा की अवज्ञा है
या अपने सैनिक पति को खोजती
चियांग लू के आंसू की धार है

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

यह आंसू Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
तुम्हारी दीवार से शक्तिशाली कैसे हैं सम्राट
इसे कौन-सी हथकड़ी पहनाओंगे तुम
खड़ी करोंगे कौन-सी दीवार

यह दीवार कहां से शुरू होती है सम्राट?

2001

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संग्रहालय में कटे हुए पांव

जाने किसने
घबराकर किसी बड़े प्रश्न का
गला घोंटा है
और ये इतिहास की चिता से बाहर
रह गये पांव
बोलते नहीं झूठ
गवाहों की तरह

जाने कहां से चलकर
पहुंचे हैं ये कटे हुए पांव
हमारे समय में
और यहां से
चुपचाप निकल पड़ते हैं
भविष्य की यात्रा पर
जाने किस उम्मीद में
सीने के भीतर
रक्त में स्वप्न छिपाए
निकल पड़ा यह आदमी
दिगंत में
थककर टूट जाने की नियति में
मौन हो जाने के लिए
एक दिन
तब तक गिरवी हैं
दुख के पास
उसके ये पांव

1982-98

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मछेरा : कुछ कविताएं

1

मछेरा ढीली छोड़ता है डोर
बेपरवाह हो जाती है मछली

क्या काल भी है मछेरा?

2

मछेरा नहीं देखता
पानी के भीतर जो देखता है जाल
कहती है कहावत
पर कहावत से बाहर है
रस्सियों की सदाशयता
जिनसे बुनता है जाल
चालाक मछेरा

काल-पाश हैं हम

3

सपने में हेहिंग्वे से पूछा
उसके बूढ़े मछेरे ने
तुमने क्यों की आत्महत्या
वो मेरा था अधिकार
खाली दिनों में
यह लो अपना
'नोबेल पुरस्कार' वापस

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक दोस्त का गरमकोट

तुम्हारे शहर से जाऊंगा एक दिन चुपचाप
सब कुछ यहीं छोड़कर
मेरे साथ जाएगी अलबत्ता
तुम्हारे गरमकोट की याद
मौत से ठिठुरते दिनों में
पहनाया था तुमने गरमजोशी के साथ

वह कोट मैं आज भी पहने घूमता हूं
अतीत में
कितने मौसम हैं उस कोट की जेबों में
जिसके साथ खेलती रहती हैं
मेरी उंगलियां
उदास लम्हों में
मेरी आत्मकथा के कुछ तुड़े-मुड़े नोट्स
तावीजों की तरह पड़े हैं निर्वासन के
अंधेरे कोनों में यहां

कितना सुखद है कि जेबकतरे
कवियों की जेबें नहीं काटते
मैं भूल नहीं पाता तुम्हारा गरमकोट
देखना, मैं तुम्हारी यादों के लिए
सिलवाऊंगा
कफन में भी जेबें...

(शैलेन्द्र ऐमा, के लिए)
1996

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नींद और सपना

नींद एक नदी की तरह थी
चांद की तरह था सपना
उस पर तैरता हुआ
दोनों अज्ञात समयों से
जानते थे एक दूसरे को
दोनों को जानते थे हम भी
आंख मूंदकर
दोनों पता नहीं कहां से चलकर
आते थे हमारे पास
और हम जागकर
नई-नई परिभाषाओं को
होते उपलब्ध

कभी जब नदी
वैधव्य-सी बीतती हुई
हमारे भीतर बह निकलती
हम समझते थे
बादलों की ईर्ष्या
तब हम भी आविष्ट होकर
एक दूसरे को सारे नियंत्रण नहीं
खोने देते
भयभीत हो जाते हम
अपने ऊपर मंडराते अदृश्य

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बादलों के एहसास से
सपना कई बार
पागलों की तरह नींद को
दिन-भर ढूंढ़ता रहता
हमारी गलियों में

हम कुछ देर
कोसतें बादल बनानेवाले ईश्वर को
फिर मन-ही-मन
उसके कोप से डरकर
क्षमा-याचना करते
बादलों ने हमें भी
कितनी देर ढककर रखा था
एक दूसरे से
उन दिनों हमारी स्मृतियों में भी सपना
समय की एक बूंद जितना
क्षणिक था
अंधेरी और उदास नदी में...

1999

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चौखट

वहां टीले पर खड़ी है
दरवाज़े की एक चौखट
अपना घर ढूंढ़ती हुई

अभी-अभी इससे होकर
गुजरे हैं हम
एक तरफ शून्य है
दूसरी ओर सन्नाटा
और हमें मालूम नहीं
इस समय जहां पर हैं हम
अतीत की गहराई है
या भविष्य का मौन

धूप और बरसात में
अकेली खड़ी यह चौखट
जैसे हवा में
किसी गहरे घाव का
सूखा हुआ निशान

1998

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक संग्रहालय

अतीत में सोई पड़ी
कई चीजें थीं वहां सन्नाटे में लिपटी
प्राचीन सिक्के, तलवारें, बख्तर बंद,
कपड़े, कंघे और आईने
इतिहास की जादुई बर्बरता
पुरातत्व की उपलब्धि
दीवारों पर दर्ज थे उनके वृत्तांत

सिर्फ हमारे चलने की आवाज़
कर रही थी हवा में तरंगें पैदा
उस बेचैन कर देनेवाले
संग्रहालय में
जो कभी महल था पूर्वकाल में

एक बूढ़ा चौकीदार चलता रहा
हमारे साथ-साथ...
कभी सोने के पालने में यहां पर झूला
महाराजा का बचपन
यहां पर इस विशाल आईने के सामने
महारानी की खुली केशराशि में
कंघी की तरह उतरता था चंद्रमा
वहां पर सजती महफिलें
बजते सितार
झूम उठते आंगन में पेड़

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

गुप्त मंत्रणाओं और रहस्यों की तरह
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
आपस में गुंथे ठंडे और डरावने कमरों से
होते हुए करता रहा बूढ़ा चौकीदार
वर्तमान क्यूरेटर की तारीफ
भव्य है उसकी व्यवस्था
रख-रखाव
यहां शिकायत नहीं किसी को
अपनी अपनी जगहों पर हैं चुप

मैंने बूढ़े चौकीदार की जेब पर
उसकी नाम पट्टी देखी
वह बैठ गया जाकर अपने स्टूल पर
संग्रहालय की एक वस्तु की तरह

1999

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कविता का रंग
(सिल्विया प्लैथ के लिए)

बरसों अच्छी कविताएं
लिखते रहने के बावजूद
तुमने की आत्महत्या...
ज़मीन में जज़्ब हो गया
तुम्हारा लहू
बहता हुआ लहू
जिसे तुम कहती थीं कविता

वहां पर
लोगों ने देखा
गुलाब का सुर्ख
तीखा रंग
उड़ गए उनके होश

जैसे कहा गया हो
तुम पर फिदा हो जाना
लिखना बहता हुआ लहू
अपने एकांत में

1996

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जीनोसाइड

ठंडे पानी के पतीले में
तैर रहा मेंढक
नहीं जानता
अलाव है उसके नीचे

पाद टिप्पणी:
इन दिनों एक प्रयोगशाला में
रहते हैं हम

1999

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रधानमंत्री और मक्खी

हम उन्हें सुना रहे हैं अपना दुखड़ा
कहीं से आकर एक मक्खी
कर रही है उन्हें बार-बार तंग
कभी नाक पर बैठती है
तो कभी माथे पर

मैं अपनी बात का सूत्र थमाकर
दूसरे साथी को देख रहा हूं
मक्खी के साहस को
उसके जीवट को

क्या वह अरसे से
प्रधानमंत्री कार्यालय के चक्कर काटती
रही होगी भिन्नाती पूर्वजन्म की मांगें

अगर मेरा भविष्य भी है इसी मक्खी-सा
जो इस समय बैठी है
प्रधानमंत्री की सफेद कमीज पर
मैं भी लगना चाहूंगा उस पर एक दाग जैसा
लोकतंत्र की अंतिम सांस तक
हम भिन्ना रहे हैं अपना दुखड़ा
वह सुन रहे हैं चुपचाप शायद ध्यान से
चेहरे पर प्रवेश-निषेध है

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

किसी भाव के लिए
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
इसलिए कही नहीं जा सकती
कि क्या सोच रहे हैं प्रधानमंत्री इस समय
तरस खाते हैं मक्खियों पर
या उनसे आ चुके हैं तंग
या देंगे आदेश खड़े होकर
पूरे देश में दवाई छिड़कने का

जब देश में रहेंगी नहीं मक्खियां
तो उनके कार्यालय में घुसकर
नहीं बैठेगी कोई मक्खी उनकी नाक पर
और भिन्नाएंगे नहीं
हम जैसे लोग बार-बार अपनी मांगें

प्रधानमंत्री आंख मूंदकर सुन रहे हैं
हमारी फरियाद
शायद सोये नहीं हैं
आंखें मुंदी हैं...
मक्खियों के डर से

(महेश भट्ट के लिए)
2001

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शरणार्थी शिविर

1
यह रास्ता
मरघट से होकर जाता है
मेरे शरणार्थी-शिविर को
तोड़ता है नियम काल के
बच्चे खेलते हैं यहां दिन-भर
बूढ़े फूंकते हैं बीड़ियां
जमा होता उनकी झुर्रियों में अवसाद
कितनी अदीख फसल है
हमारी घायल स्मृतियों की यहां
यह रास्ता
मरघट से होकर पहुंचता है
हमारे पास
जहां हम हर बार
हजारों बार
दुहारते एक ही मंत्र-
मातृभूमि...
मातृभूमि...
मातृभूमि...

2
पहले कभी नहीं आए
हमारे पास

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

जब बिलखते थे हम

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब आते हैं
विदेशी राजदूतों के साथ
चहकते हैं हम
जीवित संग्रहालय में

3

हम उनकी मज्जा हैं
रक्त हैं उनकी धमनियों में दौड़ता
वे हैं अधूरे
बिना हमारे
कहते फिरते हमें धकेलकर
शरणार्थी कैंपों में
बज रही हैं तालियां
हत्यारों की उदात्तता पर

4

अरे, तुम क्यों भागे
किसी ने कहा था क्या तुमसे कुछ
मारा किसी ने
या धमकाया
आ गए बहकावे में गवर्नर के

कितना अजब है
हत्यारे अब अपनी तरफ से भी
होने नहीं देते शर्मिंदा...

5

एक बन्दूक
सीने पर है
एक पीठ पर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं दमें का मरीज़
हो गया हूं ठीक
नि:शब्द

6
बाखुदा!
मकान तुम्हारा है ठीक-ठाक
कश्मीर में
पड़ी है वक्त की धूल
पर हैं महफूज़ तुम्हारी यादें
बंद हैं खिड़कियां आज भी
अलबत्ता एक कमरे में कुछ देर
जलती है कभी-कभार रोशनी
आती हैं
रोने की आवाजें
किसी जवान औरत की चीखें भी
कांपते हैं हम थर-थर
पर सुबह
बाखुदा! मकान तुम्हारा
दिखता है ठीक-ठाक

7
जैसे पूछी नहीं जाती
भेड़ बकरियों की राय
सरकार हमें
टैंटों सहित
ले जाएगी वापस
शेरों की मांद में

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

8

बाहर भीतर
बची नहीं है कोई जगह
मैंने मरघट पर यहां
कुछ देर बैठकर
महसूस की शांति
गोया मृत्यु-सामग्री की
कोई पुड़िया हो

9

जगमगा उठी हैं मोमबत्तियां
उदास और पीली रोशनी का उत्सव
बच्चे पेड़ों के नीचे
अंधेरे में
खेल रहे
घर छोड़ने का खेल...

10

मरघट की दिशा में
झाड़ियों के पीछे
उन्हें मिला हफ्तों के बाद
प्रेम करने का एकांत
पकड़कर ले गई पुलिस उन्हें
हंस-हंसकर बिलखते हैं
लोग अपने दांपत्य पर
तरस खाता है मरघट
हमारे विस्थापन पर

11

पड़ोसी ने मांगी सुई
मां ने टैंट के कोने से कहा मुझसे

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ले आना ऊपर बालनी की अलमारी से
उसका डिब्बा
अवाक् रह गया मैं
मां थी घर की स्मृति में
और सामने धूप में बाहर
एक विस्थापित कर रहा था
सुई का इंतजार

12

इस बारिश में
कैंप के पिछवाड़े
मुर्दा भैंस के कंकाल में छिपाकर
रख आता है एक बच्चा
          अपनी पतंग
तम्बू से उठ गया है
उसका विश्वास

1991-2005

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तमाम उम्र
(ओक्ताविओ पॉज की एक कविता पढ़कर)

इच्छाएं मेरा घर थीं
तमाम उम्र रहा अकेला उनमें

संसार की तमाम कब्रों में
दफन हूं मैं
आकांक्षाओं के साथ
सपनों की मिट्टी है मेरे ऊपर

1996

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आंगन के पार से

(1)
आंगन के पार से
तुम्हारी एक झलक ने
ढहा दिया बीच की दीवार का हौसला

हमारे बंटे हुए आंगन खुश हैं
बच्चों की तरह
घुलमिलकर आपस में

तुम्हारी मुस्कान से
पिघल रही है मेरे भीतर
जमी हुई बर्फ

बह रहा हूं मैं नदी की तरह
तुम्हारी परछाई लिए
अपने साथ...

(2)
तुम्हें देखता हूं
तो अब तक की देखी हुई दुनिया
अदृश्य हो जाती है

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम मेरे सामने हो
मेरे सरोकारों में ईर्ष्या जगाती हुई
दोस्तों की जवाब मांगती चिट्ठियों को
ज़रा-सा हताश करती हुई
मेरी दिनचर्या को थोड़ा-सा
चकमा देती हुई
तुम्हें देखता हूं
और नहीं डरता कि गलत समझा
जा रहा हूं
मेरी नंगी होती जा रही जड़ों को
खाद की तरह ढक रही हो तुम

नहीं डरता
किसी की बदनज़र से भी
डरता हूं कि मैं तुम्हें देखता हूं
और यह दृश्य
पलक झपकने से न हो जाए गुम

(3)
पूरे वायुमंडल पर लिखी
तुम्हें देखकर कविता
आकाश के नीले लिफाफे पर
चिपका दी यह पृथ्वी
एक डाक-टिकट की तरह

नहीं मिला आज तक
वह लेटर-बॉक्स
जिसमें डाल सकूं आसमान
जिसमें धड़कती है मेरी कविता

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं तुम्हारे लिए एक ब्रह्मांड लिए
घूम रहा हूं हृदय में
जैसे मन्वन्तरों से...
कहां हो तुम?

(4)

दीवार के पार
उछलकर जाती है तुम्हारे आंगन में गेंद
मुझे लगता है
यह दीवार थोड़ा झुककर
गुज़रने देती है गेंद को
अपने ऊपर से
गेंद
तुम्हारे पास ले जाती है
मेरे स्पर्श
चिंताएं और आकांक्षाएं मेरी
और झांकती है हमें आर-पार
कभी जाती है गहन अंतरिक्ष में
यह गेंद
कभी अतीत के अंधेरों में
जैसे दोनों हों वर्तमान
यह गेंद है
जो दीवारों के बावजूद
हमें शमिल करती है
अपने खेल में

(5)

दीवार के पार
चांदनी में घुल रही हैं
पखुंड़ी-सी बातें
मैं देखता हूं खिड़कियों के कांच से

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम आंगन में
टहल रही हो अकेली

मुखर है तुम्हारा मौन।

मैं सुनता हूं
अपने दिल की दस्तकें
और उतारता हूं दीवार के पार
तुम्हें टटोलता हुआ हाथ
जिसमें तुम थमा जाती हो
कविताओं के बीज
जिन्हें बचाकर
मैं जाऊंगा नई शताब्दी में
हताशाओं के बावजूद

(6)
सपने की तरह चली गई हो तुम
दीवार के पार से
झांकता है सन्नाटा
चीजों के अर्थ हो गए हैं सपाट

चिड़ियां तुम्हारी छत से उड़कर
मेरे कमरे की तलाशी लेने आती हैं
हवाएं पूछती हैं तुम्हारा पता
आकाश से कटकर गिरी
एक पीली पतंग
झूल रही है
तुम्हारी छत से
सभी स्मृतियां खुलना चाहती हैं एक साथ
तुम्हारे दरवाज़े के ताले की तरह

1999

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कैलिफोर्निया में केंकड़े

हम बढ़ते हैं बहस में उलझे हुए
एक आत्ममुग्ध रेस्तरां की तरफ।

सेन-फ्रांसिस्को के पियर-39 पर
उतर रही है शाम।

"उधर देखो
वह रसोइया सीटी बजाता हुआ
ज़िन्दा केंकड़ों को डाल रहा है
उबलते पानी में
और दूसरा उन पर मसाले और सॉस
छिड़ककर यंत्रवत्
सजाता है प्लेटों में"
कहता है मेरा प्रवासी मित्र
जिसकी आंखों में
भर गई है नीली आंखोंवाले देश की चालाकी
यह रंग चढ़ता है शराब की पहली घूंट से यहां
हिल्लौरें लेती है आत्मा
अतलांत के पानी में
उधर केंकड़े उबलकर फूल रहे हैं कड़ाही में
एक दूसरे की टांग खींच रहे हैं केंकड़े
केंकडे गा रहे हैं उबलते पानी में
नाच रहे हैं सेन-फ्रांसिस्को के बीच पर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

केंकडे पोत[illegible] और [illegible] रंग
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
गिटार बजाते मांग रहे हैं भीख
केंकडे झूम रहे हैं यहां
अपने देशों से दूर
मेरी पीठ थपथपाता है मेरा दोस्त

"अमेरिका में
कवियों के लिए स्पेस
और कलाओं के लिए समय नहीं है''
कहता है वह
मैं आता हूं रेस्तरां से बाहर
कांच के पीछे से पुकारते हैं रसोइए
शालीनता के साथ
क्षुब्ध है मेरे दोस्त की
आंखों में अतलांत का जल
और अधूरी बहस
मेरे देश की हालत पर...

1999

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एम्स्टर्डम के रेड लाइट एरिया में

कांच के पीछे
एक नंगी औरत पढ़ रही है किताब
जैसे हो किसी कालजयी उपन्यास की नायिका
या कोई महान रचनाकार
बाकी नंगी स्त्रियां
खड़ी हैं व्यंग्योक्तियां की तरह
अपने-अपने कांच-घरों में
कौंधता है होटल जाकर
कविता लिखने का विचार
तिलमिला उठता हूं रेड लाइट एरिया में
अपनी क्षुद्रता पर

वह नंगी औरत जो कुर्सी में बैठकर
पढ़ रही है किताब
याद दिलाती है मुझे खुद की ओट में
मेरे किए हुए पाप

वह स्त्रीं नंगी होकर
पढ़ रही है किताब
मैंने कभी नहीं इस तरह पढ़ी है
अपनी किताब
सबके सामने बाजार में

1999

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जेहाद

घुस आया
काफिरों के घरों में जेहाद
बनवाया पहले कहवा
पड़ी कुछ दालचीनी
कुछ इलाइची कुछ केसर
जैसे गाढ़े खून में
लाजवाब होता है
कुफ्र का स्वाद
देखकर उनकी बंदूकें
छिप गया चिनार के खोंखड़ में जाकर
एक तेरह बरस का मासूम बच्चा
देखता रहा जमी हुई नज़रों से
मां-बहनों का सर्वनाश
लाशों के छटपटाते ढेर
चिनार के खोंखड़ में
खो रहा था सिसकियों के अंधेरे में
वो तेरह बरस का बच्चा

'यह नहीं है इस्लाम!'
रो पड़ा फूट-फूट कर एक मुसलमान
देखकर एक बरस की नन्हीं जान का
छलनी शरीर...
अट्ठारह सुराख!

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'हे परवरदिगार!'
खायी उसने भी एक गोली
सहम गया अंधेरे में गांव

चिनार के खोंखड़ से
आज भी आती है
एक बच्चे के सिसकने की आवाज़

(वंदहामा हत्याकांड के एकमात्र गवाह तेरह वर्षीय विनोद कौल के लिए)
1999

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हारी याद

तुम्हारी याद
जैसे सर्जरी के दौरान
भूल से रह गई हो
        दिमाग की नसों में
एक महीन सुई...

तुम्हारी याद
जैसे नींद में
धीरे-धीरे फैल गई हो
कहीं से
चूल्हे की गैस...

तुम्हारी याद
जैसे कर्फ्यू लगी अंधेरी रात में
कोई आदमी नींद में
        सड़क पर दौड़ रहा हो...

तुम्हारी याद में
मेरी नसें फट रही हैं
जल जाऊंगा अभी मैं
शायद मैं कहीं मार दिया जाऊंगा
गोली से

1998

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जीवन-राग

एक ऊंचे पेड़ की फुनगी में
लंबे नुकीले कांटे की नोक पर
आ बैठी चिड़िया
और गाने लगी जीवन का गीत
और खोलती रही
बीच-बीच में सुनहले पंख आकाश में
रुक गया कुछ देर
सूर्य का विस्मित रथ

कांटा नुकीला
चुभता गया अंदर-अंदर
चिड़िया के जीवन में
उसकी सोची हुई दुनिया में
स्वप्न में
उड़ारी में
पेट और अंतड़ियों को छेद कर
निकला बाहर
और सरक उतरी चिड़िया
कांटे की जड़ तक
पर गीत गाना नहीं छोड़ा चिड़िया ने
खुश थी
जीवन-राग था उसकी आंखों में
चिर-वांछित

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह उसका लम्हा
और सेज पिया की...
टपका लहू
यह उसकी कविता...
काल समुद्र में डूब गया
लहू के रंग का चंद्रमा

तब से गाती हैं समुद्र में लहरें
चिड़िया के गीत
मैं डरता हूं
खुद को
कवि कहते

2005

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काला दिवस

मैं इस तारीख का क्या करूं
पहुंचता हूं बरसों दूर मातृभूमि में

सीढ़ियों पर घर की
फैल रहा है खून अभी तक
मेरी स्मृतियों में
गरजते बादलों
और कौंधती बिजलियों के बीच
स्तब्ध है
मेरी अल्पसंख्यक आत्मा
वहीं कहीं अधजले मकान के मलबे पर
जहां इतने निर्वासित बरसों की उगी घास में
छिपाकर रखी जाती हैं
पाकिस्तान से आई बन्दूकें

यहां किसे बख्शा गया मेरे देश में
निर्दोष होने के जुर्म में
तैरती हैं आज भी हवा में
दहाड़े मारती स्त्रियों की बद्दुआएं

आज के दिन
मैं यहूदियों की तरह
किसी 'वेलिंग-वाल' के सामने जाकर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रोना चाहता हूं ज़ार-ज़ार
अपने जीनोसाइड और जलावतनी पर
और पलटकर
भूल जाना चाहता हूं कल्पनातीत
जो जो हुआ हमारे साथ

आज के दिन कोई आए मेरे पास
ले जाए मुझे
किसी पहाड़ी यात्रा पर
मैं छूना चाहता हूं
एक नया और ताजा आकाश

(कर्मेन्दु शिविर के लिए)
2000

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जवाहर टनल

गीले और घने अंधेरे से भरी थी
जवाहर लाल नेहरू सुरंग
और हम दहशत खाए लोग
भाग रहे थे सहमी बसों में

जवाहर लाल नेहरू सुरंग में
जैसे कूट कूट कर भर गया था अंधेरा
इतने वर्ष
और टप टप गिरती बूंदे ये
ज़ार ज़ार रो रहा था
पांचाल पर्वत
नेहरू के गुमान पर
या हमारे हाल पर

हमारी बसें फंसी पड़ी थीं सुरंग में
और अब उनका धुआं भी
शामिल था
अंधेरे में

कानों में अभी भी गूंज रही थीं
जेहादियों की गालियां
उनके उद्घोष
धमकियां

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ठांय ठायं!!
गोलियों की अठखेलियां
हथगोले और बमों के अट्टहास
अल जेहाद!
अल जेहाद!
अल जेहाद!

जवाहर लाल नेहरू सुरंग में
हमारे सिकुड़े शरीरों के अंदर दबे कोलाहल में
छिपी बैठीं
लहूलुहान स्मृतियां इस समय
क्यों जाग रही थीं
गीले अंधेरे में
शून्य में उभर रही थीं
बलात्कृत हो रही
छटपटाती बिलखती
हमारी बहनें

घरों के दरवाजों पर
खून की टपकती छीटें उकेरते
ये नए नए भित्तिचित्र
हमारे सामने

सुरंग में फंसे थे हम
नीले थे हमारे चेहरे
और होंठ थे पीले
पपड़ियाए
जैसे सूखी बिवाई फटी थी
हमारी धरती सौंदर्यशास्त्र की
झेलती अकाल
दशकों से

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

टुकुर टुकुर देखती
सूने आकाश में कभी नहीं प्रकटा
इन्द्रधनुष यहां
कि गा उठतीं घुटनों तक फूलों से भरी
उपत्यका कोई
भीतर उसके

फिलहाल हमें सुरंग से होते हुए
निकलना था
पर्वतों के दूसरी तरफ
शेष हिंदूस्तान में

एकमात्र था इत्मीनान
कि जैसे तैसे बचा लाए थे
हम खौफजदा बहू-बेटियां अपने साथ
बच्चों के स्कूली बस्ते
और कृषकाय बुजुर्गों की शेष जिंदगी
यही थी उपलब्धि इस वक्त
हमारे पांच हज़ार वर्षों की

बाकी सब छूट गया था पीछे
अखरोट और चिनारों की हरी छांव में
स्टापू का खेल
चिमेगोइयां
पर्वतों के धुंधलके में ओझल हो जाती
चिड़ियों को देख
हमारा उदास हो जाना

पीछे छूट गया था
इतिहास और संवत्सर अपना
मिथक

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
देवता और तीर्थ अपने
मेले-ठेले
तीज-त्यौहार
घर-बार अपना
उनकी स्मृतियां थीं हमारे साथ भागतीं
चुपचाप
जैसे
मुंहअंधेरे भागते गांव से
चली आई थीं दौड़ती कुछ दूर
हमारी गायें भी
सामान लदे ट्रकों के पीछे

बसें चिंघाड़ रही हैं अंधेरे में
जैसे लगा रही हों गुहार
जवाहर लाल नेहरू के 'आनंद भवन' में
परंतु सच यह था
कि हम नहीं थे इलाहाबाद में इस समय
जहां गंगा थी
सरस्वती थी
आपस में घुल-मिल

हम थे अंधेरे में
ठिठुरती ठंड में
संकरी श्वासनली में अवरूद्ध
हवा के कण जैसे

और संसार था ईर्ष्या से भरा
हमारे प्रति
जबकि हम भाग रहे थे स्वर्ग से
भिंची हथेलियों में जान थी हमारी
कमीज के अंदर थे छिपाए

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चिनार क पत्ते
और जेबों में ठूंस भरी थी
गांव की मिट्टी

जहां तक मेरी बात है
मैंने कमीज़ के अंदर खोंस रखी थीं
ललद्यद की कविताएं
जिन्हें छू छूकर
इस गीले और सघन अंधेरे में
मैं हो रहा था तनिक तनिक ज़िंदा
"अरे पगले,
कौन मरेगा और मारेंगे किसको?"
कान में कह रही थीं
ललद्यद मुझसे

तय था कि हम भाग रहे थे
और गढ़ी जा रही थीं अफवाहें
सेंकी जा रही थीं
लोकतंत्र के तवे पर
झूठ की रोटियां

यह मानवाधिकारों के दिन थे
और हमारे नहीं थे मानवाधिकार
चुप थीं भेड़ें
और यही था सद्भाव
कसाई बाड़े का
चिंघाड़ रहे थे वाहन
आतुर थे हम
सुरंग से बाहर थी रोशनी
सुरंग से बाहर थीं उम्मीदें
सुरंग से बाहर थी सुरक्षा

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुरंग से बाहर थे कवि, कलाकार
और संस्कृतिकर्मी

खुला था आसमान सुरंग से बाहर
और
हम उतरे पर्वतों से शरणार्थी कैंपों में
फैल गए संविधान के फफोले तम्बुओं में
बिलबिलाए कीड़ों की तरह
जुलूसों में
धरनों में
हम उछले नारों में
दब गए अत्याचारों में

यहां धूप थी
तेज़ाब था
लू थी
सांप थे
बिच्छू थे
रोग थे
श्मशान था
ओढ़ने को आसमान था
सोने को हिंदुस्तान था
मेरा देश महान था

2006

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लहरें

दौड़ती हुई आकर
उड़ भागना चाहती हैं
मुक्ति-कामना का
यह अनंत संघर्ष उनका

कहती थीं मेरी मां
सृष्टि के अनादिकाल में कभी
फिसल गिरी थीं चांद से
और तब से नहीं टूटता
बूढ़े समुद्र में
उनका आजीवन कारावास

और तुम
कहते हो ज्वार-भाटा...
सड़ियल तुम्हारा सौंदर्यबोध
फेंक आओ किसी कूड़े में
प्राचीन काव्यशास्त्र के ग्रन्थ
अलंकार-सिद्धांत

ये लहरें बंद हैं हथकड़ियों में
गाती हैं क्रांति के गीत
देखना एक दिन
उड़ जाएंगी आकाश में

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हमारे ऊपर से
देखते रह जाओगे तुम
अपना सा मुंह लिये
समुद्र की तरह

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धूल

जब हमें दिखाई नहीं देती
पता नहीं कहां रहती है उस समय
और जब हम एक धुली हुई सुबह को
जो खुलती है हमारे बीच
जैसे कि एक पत्र हो
उसके किसी बे-पढ़े वाक्य को छूने पर
हमारी उंगली से
चिपक जाती है

यह कैसे समय में रह रहे हैं हम
कि धूल सने कांच पर
हमारे संवेदनशील स्पर्श
हमारी उधेड़बुन
हमारे रेखांकन
हमारी बदतमीज़ियों के अक्स
कहे जाते हैं
यह समय क्या धूल ही है
जिससे कितना भी बचा जाए
पड़ी हुई मिलती है
उस अलमारी में भी
जिसे हम सबके सामने नहीं खोलते
मैंने सपने में खिल आए गुलाब पर भी
इसे देखा है

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यों देखा जाए तो
जिसे हम काली रात कहते हैं
यह सूरज की आंख में
धूल का झोंका है

इन शब्दों में
जबकि मैं लिख रहा हूं कविता
यह झांक रही होगी कहीं पास से
और मेरे कहीं चले जाने पर
उतर आएगी मेज़ पर

2002

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुल पर गाय

सब तरफ बर्फ है खामोश
जले हुए हमारे घरों से ऊंचे हैं
निपत्ते पेड़

एक राह-भटकी गाय
पुल से देख रही है
ख़ून की नदी
रम्भाकर करती है
आकाश में सुराख

छींकती है जब भी मेरी मां
यहां विस्थापन में
उसे याद कर रही होती है गाय

इतने बरसों बाद भी
नहीं थमी है खून की नदी
उस पार खड़ी है गाय
इस पार है मेरी मां

और आकाश में
गहराता जा रहा है
सुराख

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गूंगी मां[1]

कहते हैं गूंगी थी वह
लेकिन चिड़ियों से करती थी बातें

कहते हैं बहरी थी
परंतु पेड़ झुक कर सुनाते उसे फरियाद

कहते हैं किसी काम की न थी
पर फूल चुनते देखी जाती गांव में

लोग उसकी फटी झोली पर खाते तरस
कहते हैं तारामण्डल उतरता
रात को उसमें

एक दिन ठेस दी उसे किसी ने
कहते हैं उसे चिड़ियां उड़ाकर ले गईं अपने साथ

कौन तुम ओ अनजान चिड़िया
हर दिन आ बैठती हो यहां निर्वासन में
मेरी स्मृति की खिड़की पर
मुझे याद आती है गूंगी मां
पेड़...
फूल...
तारामण्डल...
और यह अभिशाप अपना

2000

1. कश्मीर के लोकभवन गांव की लोक-स्मृति में रची-बसी एक गूंगी स्त्री

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक पाकिस्तानी दोस्त का आना-2

तवी में तैरने के लिए
तुम सीख रहे हो तैराकी
सुनो अली अदालती,
मेरे शरणार्थी कैंप से एक दिन
गायब हुई
एक जवान लड़की

वह पहुंची थी
निबिड़ और घने अंधेरों को पार कर
बारूद भरी घाटी में अपने गांव
और कूद पड़ी कपड़ों सहित
मछलियों से भरे सूर्यकुण्ड के हरे
रेशमी जल में

तैर कर गई कुण्ड के बीचोंबीच
अपने इष्ट के पास
चढ़ाया बरसों बाद नम आंखों से जल

रो पड़ीं सूर्यकुण्ड की
असंख्य मछलियां उसे देख
सिसकियां भरीं
बुजुर्ग चिनारों ने
पर्वतों ने बहाए बर्फ के आंसू

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आकाश से उतरे पेड़ों पर
हजारों पंछी
गोया किन्नर हों
गन्धर्व हों

वह तैरती रही
सूर्यकुण्ड में
स्मृति में
स्वप्न में
नींद में

उसे पहचाना हवाओं ने
मिट्टी की सोंधी गन्ध ने
वह तैरती रही
त्रासद उल्लास में
जैसे तैर रही हो अंतिम बार

उसके आगे पीछे
पानी की दुनिया में फैल गईं
मछलियां...
यह रक्षा-कवच उनका!

वह तैरती रही आपे से बाहर होकर
और भाग आई
रातोंरात वापस निर्वासन में

वह आज तक हैरान है
उसे जल में तैरना कैसे आया

2006

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गृहमंत्रालय में चूहेदानी

हमें बुलाया गया सुरक्षा जांच के लिए
एक एक कर पहुंचे हम उनके सामने
शिकायतों से लैस
धर्म और आतंक के सताए
जलावतनी से बौखलाए
दीवार पर राष्ट्रपिता
हंस रहे थे मूंछों के पीछे
शायद हम पर
गृहमंत्री हैं विराजमान
आंक रहे हमारी नब्ज़
दंग रह गया मैं
थी उनकी कुर्सी के नीचे
एक चूहेदानी
पहुंच गए हैं चूहे
यहां भी
बज रहे हैं गृहमंत्री के फोन
शायद चूहों के बारे में ही
पहुंच रही थीं सूचनाएं
जैसे वबा के संकेत

हममें से एक सदस्य ने
पढ़कर सुनाया उन्हें ज्ञापन
शायद यही था भेद

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राष्ट्रपिता की हंसी का
सोच रहा हूं
उनके देखते देखते
क्या कुतरे जाएंगे हम यहां भी

फिलहाल बज रहे हैं
गृहमंत्रालय में फोन

2004

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सौतेले दिनों की कविता

मेरा दुख उन्हें असुविधा में डाल देता है
मुझे नहीं आना चाहिए था
इसे साथ लेकर
वे हो जाते हैं निरुत्तर
और यह उनके लिए कितने बड़े दुख की बात है

उनके यहां दुख था
एक चुने हुए मुद्दे की तरह
मुश्किल से हाथ आया हुआ

वे उस पर रात दिन लिख रहे थे कविताएं
पत्रिकाओं के पन्नों पर
चमक रहे थे उनके वक्तव्य
त्रासद था हिंसा और उन्माद पर
लिखी जा रही कविताओं की तुलना में
किसी एक खास कवि को उछाला जाना

मेरे दुख से कुछ नहीं था बनने वाला
उस पर बोलने के खतरे थे
ये धर्म और जाति देखकर
शोकगीत लिखने के दिन थे

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
मैंने समझाया अपने दुख को
कि वह मेरे सीने में दबा चुपचाप
देखता जाए
दुनिया का एक्स-रे
चलता चले मेरे कदमों से आवारा
वर्जित क्षेत्रों में
करे खलबली पैदा
देखे दया से उन्हें
जो बचते हैं मेरे कहे शब्दों से

दुख मेरे अटपटे हैं

(नसीरुद्दीन शाह के लिए)

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विरसे में गांव

पिता ने गर्व से दिखाई थीं मुझे
गांव ले जाकर अपनी जड़ें
खेत खलिहान
नदी, अखरोट
और चिनार के पेड़ .
जो छिन चुके थे पिता से
विभाजन के बाद पाकिस्तानी हमले में
लेकिन बचा लाए थे वह समूचा गांव
अपने हृदय में
हम शहर दर शहर बसते-उजड़ते
जहां भी रहे
स्मृतियों में रहे अपने गांव में

पिता ने दिया यह विरसा
एक दिन मुझे सौगंध के साथ
कि कभी न भूलूं मैं अपनी जड़ें
जनपद अपना
नहीं तो
वह स्वीकार नहीं करेंगे
तर्पण मेरा

क्या यह पिता को था एक और
जलावतनी का पूर्वाभास

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

क्या वह देख रहे थे
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
खोदी जा रहीं हमारी जड़ें
मालूम था उन्हें
स्मृति और सोंधी महक मातृभूमि की
रखेगी हमें ज़िन्दा
खानाबदोश बरसों में

मैं लड़ता रहूंगा पिता
स्मृतिलोप के खिलाफ
और पहुंचूंगा एक दिन
हज़ार हज़ार संघर्षों के बाद
अपने गांव की नदी पर
बुलाऊंगा तुम्हें पितृलोक से
चिनारों के नीचे
पिलाऊंगा अंजुरी भर भर तुम्हें
वितस्ता का जल

पिता, मैं सांस सांस जी रहा हूं
गांव अपना
तुम स्वीकार करो मेरा तर्पण

2006

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक हिंदुस्तानी कन्संट्रेशन कैंप

चारों तरफ पहाड़ों को देख
खुश हुए थे यहां पहुंच कर विस्थापित
तब उन्हें नहीं था मालूम
बीत जाएंगे इतने बरस
यहां पड़े कीड़े-मकोड़ों की तरह
और जियेंगे खतरों और अफवाहों में
बहसों और भाषणों में
अवसाद और सन्नाटा
धूप और बारिश रहेगी उनके साथ

उन्हें नहीं था मालूम
घिसे फटे तंबुओं में
जब वे सोए थे यहां इन टैंटों में
कृतज्ञता के साथ पहली रात
बाहर हंस रहे थे तपे हुए पहाड़
उनके हाल पर
यहां आज भी उसी तरह स्त्रियां
रोज़ रोज़ पकाती हैं गीले धुएं से खाना
धोती हैं कपड़े
दमें के मरीज़ बच्चों को
भेजती हैं स्कूल
करती हैं ईर्ष्या औरों की मृत्यु से
पुरुष उठ कर टोलियों से

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

चले आते हैं चुपचाप
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कैदियों की तरह हर शाम
जैसे अपनी अपनी बैरकों को

जलते हैं लालटेन
चमक उठती हैं खामोशियां
उनकी झुर्रियों में

कुछ लोग घुमाते हैं ट्रांज़िस्टरों की सुइयां
सुनने के लिए कहीं से भी
अपने बार में कोई समाचार

(बटलबालियां, उधमपुर के कैंपवासियों के नाम)

2002

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दहशत

हम देखे जा रहे हैं
हमें कोई देख रहा है
हम जानते हैं कि हमें कौन देख रहा है

हमें नहीं पता लेकिन
कि हम देखे जा रहे हैं
हमें नहीं पता
कि हमें कोई देख रहा है
हमें नहीं पता
कि हमें कौन देख रहा है

हम जानते हैं
कि आप हमसे क्या पूछ रहे हैं
हम जानते हैं
कि आप हमसे क्यों पूछ रहे हैं

हम आपको कैसे बताएं
कि हम कुछ नहीं जानते
हमने किसी को नहीं देखा
हमने कुछ नहीं देखा

देखो हम सब
आपकी तरफ देख रहे हैं
और हमें कोई देख है

2005

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

याद करता है बच्चा

क्या हुआ था उस बौरायी हवा में
हमारे परिवार के साथ
कैसे सहम गया था गांव
भाग गई थी नदी
छोड़कर रामभरोसे चिनारों को

बाहर हज़ारों गुस्साए कव्वों का
शोर था आक्रामक
और हम थे बेछत घोंसले में
या हम थे बेल पर
अंगूरों के आखिरी गुच्छे की तरह घबराए

रो रही थी मां
रो रही थी दादी
रो रहा था छिटकू
चाची थी रो रही
और आप हाथ जोड़े
चुप रहने को कह रहे थे
बुझा दी गई थी बिजली
पसर गई थी चुप्पी
गली में पटाखों की लड़ियों की तरह
गुलछर्रे उड़ा रहा था शोर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पापा,
कल जब दूरदर्शन पर
दिखाया जा रहा था कश्मीर
बर्फीली चोटियां
झीलें, झरने, हरे मैदान

लगा मुझे हम पीले ज़र्द पत्ते हैं
बुहार दिए गए झाड़ू से
यहां कैंपों में
पापा, क्या हमें यहां से भी
उड़ा ले जाएगी हवा?

(बेटे हिमालय के लिए)
2006

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छत पर चांद

मैं जब तुम्हें कर रहा था याद
तुम छत पर आंखों आंखों नाप रही थीं
पीले चांद तक की दूरी

मैं जब तुम्हारे दरवाज़े का
ताला देखकर लौट रहा था
तो मैंने तुम्हारे गमले के फूल की
बेबसी नहीं समझी

क्या उसी रात
तुमने आंगन के पेड़ पर
चांद को उतरते देखा था

क्या तुम जानती हो
तुम्हारी खिड़की की सीध में
पेड़ की फुनगी पर बैठा चांद
तुम्हें रात भर कैसे देखता रहा
एकटक

ऐसी कितनी रातें उसकी
अनंतकाल से कटी हैं
निष्पलक
और हर पल

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहीं से भी
केतु के ग्रस लेने की
आकांक्षा
निरंतर

जानती हो
जब चांद तुम्हारी छत पर
नहीं आता
तुम्हारे पेड़ पर नहीं उतरता
वह थककर
पखवाड़ा भर सोया होता है

संसार नहीं जानता
चांद का कृष्णपक्ष
उसकी विरह वेदना है

मैं इस समय
मन ही मन अंधेरे में
तुम्हारी छत पर टहल रहा हूं
नीचे मेरे कमरे में
टेलिफोन की घंटी बज रही है

क्या तुम हो?

2005

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अलाव

पहुंच गए थे हम
निबिड़ रात और बीहड़ अरण्य में
जलाया सघन देवदारों के नीचे
हमने अलाव
तप गया हमारा हौसला
सुबह होने तक रखा तुमने
मेरे सीने पर धीरे से
अपना सिर
स्मृतियों से भरा
विचारों से स्पंदित
और स्वप्न से मौलिक
भय और आशंकाओं के बीच
सुनी तुमने
मेरी धड़कनों पर तैर रही
फूलों से भरी एक नाव
मेरे जीवन-लक्ष्य की तरफ जाती हुई
इस निबिड़ रात और बीहड़ अरण्य में
सूरज के उगने और पंछियों के कलरव के साथ
बदलने जा रहा था संसार
समय की सदियों पुरानी खाइयों
गुफाओं में
उतरने वाली थी रोशनी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पेड़ों के खोखले तनों में
हमने खेल खेल में जा छिपना था कुछ देर
बातें करनी थीं अनकही
और मन किया तो करना था प्यार भी
नैसर्गिक
फिलहाल
सुबह का इंतज़ार था
और मैं अपने सीने पर
महसूस रहा था तुम्हारी सांसें
तुम्हारी नींद
और हाथ तुम्हारा

शायद
इस निबिड़ रात और बीहड़ अरण्य में
हम बचा रहे थे इस तरह
अपनी स्मृतियां
विचार अपने
और स्वप्न भी

हमने बुझने नहीं दिया अलाव

2008

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्मृतिलोप

तरह तरह से आ रही थी मृत्यु
खत्म हो रही थीं चीजें
गायब हो रही थीं स्मृतियां

पेड़ों से झर रहे थे नदी में पत्ते
और हम धो रहे थे हाथ

मरते जा रहे थे हमारे पूर्वज
दूषित हो रही थीं भाषाएँ
हमारे संवाद
प्रतिरोध
उतर चुके थे जैसे दिमाग से

हम डूब रहे थे
तुच्छताओं की चमक में
उठ रहे थे विश्वास
जो ले आए थे हमें यहां तक

बची रही थी जिज्ञासा
निर्वासित थी संवेदनाएं
नए शब्द हो रहे थे ईजाद
अर्थ नहीं थे उनमें
ध्वनियां नहीं थीं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

रस, गन्ध, [illegible] नहीं था
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
स्पर्श नहीं था
उन्हीं से गढ़ना था हमें
नया संसार

एक तरफ घोषित किए जा रहे थे
कई कई अंत
दूसरी तरफ
हम थे कुछ बचे हुए ज़िद्दी
और भावुक लोग
कुछ और भी थे हमारे जैसे
यहां वहां इस भूगोल पर
करते अवहेलनाएं
लगातार

2007

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आशंका

हम हुए जा रहे इतिहास
स्मृति बामियान बुद्ध की

हम चलते फिरते अवशेष
एक जलावतन सभ्यता के

हम देख रहे हैं शरणार्थी कैंपों को
बदलते एक संग्रहालय में
कोई यहूदा अमीखाई[1] से कह दे
उसकी कविताएं बनेंगी

हमारा समाधिलेख

2006

1. प्रसिद्ध हिब्रू कवि

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बारिश में पिट रही स्त्री

तेज़ बारिश
और आधी रात में
मेरा पड़ोसी अपनी पत्नी को
पीट रहा है
जैसे स्वतन्त्रता-संग्राम का
कोई दृश्य हो
थाने में सत्याग्रही

बारिश में पीट रहा है
मेरा पड़ोसी अपनी पत्नी को
निःशब्द है स्त्री
संकोच और लज्जा के साथ

कौन नहीं जानता
आंसूओं की दुनिया में
चेहरे पर हंसी
स्त्री की ईजाद है
मेरी खिड़की के कांच से
बज रही है बारिश
स्त्री के आकाश से
बरस रहे हैं आंसू

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बहुत पहले कहा था
आन्द्र वाज़्नेसेन्स्की ने:
कोई एक स्त्री को पीट रहा है
कार में, जिसमें
एकदम अंधेरा और गर्मी है

क्या फर्क पड़ता है
ओ मेरे प्रिय कवि
स्त्री मेरे पड़ोस में पिटे
या रूस में
वह पिट रही है
ज़रूरी समर्थन के अभाव में
एक विधेयक की तरह

इसीलिए वह हंसती है
रंगीन पत्रिकाओं में
धूप में उसका चेहरा चमकता है
रात में आंसू

बारिश मेरे कमरे में आ रही है
मैं पीट रहा हूं
अपना माथा
तेज़ बारिश और आधी रात में

2005

□□

G.M. College of Education
Raipur
Ja...
Acc No 3737 (D)
Dated 17/10/2022

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

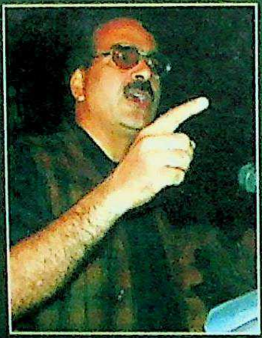

अग्निशेखर

कश्मीर में जन्मे अग्निशेखर हिंदी के सुपरिचित कवि और लेखक हैं। लोक -जीवन, संगीत तथा पर्वतारोहण में गहरी रूचि रही है। लोकवार्ता सम्बंधी लेख चर्चित रहे हैं।

'किसी भी समय' (1992), 'मुझसे छीन ली गयी मेरी नदी'(1996), 'कालवृक्ष की छाया में' (2002) और 'जवाहर टनल' (2009) कविता-संग्रहों के अतिरिक्त 'मिथक नंदिकेश्वर' एवं आतंकग्रस्त कश्मीर-केंद्रित अलग अलग भाषाओं की कहानियों का संकलन 'दोजख' सम्पादित। अंग्रेजी में अनूदित उनकी हिंदी कविताओं का सह-संकलन 'No Earth Under Our Feet' प्रकाश्य।

इनकी अनेक रचनाओं के कश्मीरी, डोगरी, पंजाबी, तेलगु, गुजराती, मराठी, बांग्ला, उर्दू में अनुवाद हुए हैं। अग्निशेखर ने कश्मीरी से प्रतिनिधि कवियों की रचनाएं हिंदी में अनूदित की हैं। प्रतिष्ठित हिंदी पत्रिका 'पहल '36 , और 'वसुधा'-74, के चर्चित कश्मीरी अंकों का इन्होंने अतिथि संपादन किया। एक कहानी पर'शीन' शीर्षक से फिल्म भी बनी। 1994 में केंद्रीय हिंदी निदेशालय का हिंदी लेखक पुरस्कार, 2003 में सूत्र-सम्मान से सम्मानित। सन 1990 से अलगाववाद और जेहादी आतंकवाद के चलते कश्मीर से निर्वासित अग्निशेखर धार्मिक कट्टरता, 'जीनोसाइड' तथा 'एक्सोडस' के विरुद्ध लगातार सक्रिय।

संपर्क : बी - 90/12 , भवानी नगर, जानीपुर, जम्मू -180007

ई - मेल :agnishekharinexile@gmail.com मोबाइल : 09697003775

आवरण चित्रः कुंवर रवीन्द्र

ISBN : 978-93-82009-57-3

₹ 129

नए लोग, नई सोच

ज्योतिपर्व प्रकाशन

99, ज्ञान खंड–3, इंदिरापुरम, गाजियाबाद 201012

CC-O. Agar ... Digi... ...tion Foundation Chandigarh